रजिस्ट्रेषन संख्या :– R.N.I. 36355/79
डाक पंजीकरण संख्या :– के पी सिटी– 67/2021–23

अधिकार किसको जानने के लिए भारत सरकार की वेबसाइट www.dhr.gov.in लॉगिन कर क्लिक करें अल्टरनेटिव मेडिसिन तथा गज़ट पढ़ने हेतु log in करें www.behm.org.in

चिकित्सा–विज्ञान और प्रौद्योगिक जगत में सर्वाधिक प्रकाशित होने वाला निष्पक्ष समाचार पत्र

पाक्षिक

इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट

पत्र व्यवहार हेतु पता :–
सम्पादक
इलेक्ट्रो होम्यो मेडिकल गज़ट
127/204 'एस' जूही, कानपुर–208014
सम्पर्क सूत्र :– 9450153215 , 9415074806 , 9415486103

वर्ष – 43 अंक – 23 कानपुर 1 से 15 दिसम्बर 2021 प्रधान सम्पादक – डा0 एम0 एच0 इदरीसी वार्षिक मूल्य ₹ 100

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हितैषी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी का वास्तविक विकास करें–डा0 इदरीसी

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को जन जन तक पहुँचाना मुख्य प्राथमिकता
अधिकार पूर्वक कार्य के लिये , राज्य में प्रचलित कानूनों का पालन करना होगा
प्रतिस्पर्धा में वही टिकता है जिसके पास बौद्धिक सम्पदा का भण्डारण हो
कार्य संस्कृति बड़ी तेज़ी के साथ बदल रही है
नवीन जानकारियों से रहना होगा अपडेट
दोहरे व्यवहार से सफ़लता संदिग्ध रहती है
सब कुछ सामान्य सा नहीं है

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए आवश्यक है कि इस स्थापित चिकित्सा पद्धति का वास्तविक विकास किया जाये और विकास का स्वरूप कुछ इस तरह का हो जिसका लाभ आमजन भी उठा सकें तभी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को स्थायित्व दिया जा सकता है, यह बात बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने डा0 नन्द लाल सिन्हा की जयन्ती प्रेरणा दिवस के अवसर पर कही।

डा0 इदरीसी ने कहा कि वर्तमान समय में इलेक्ट्रो होम्योपैथी में जो कुछ भी चल रहा है वह कुछ सामान्य सा नहीं है, विकास एवं मान्यता के नाम पर बड़ी–बड़ी बातें की जाती हैं बड़े–बड़े दावे किये जा रहे हैं सम्मेलन तथा बैठकें की जा रही हैं परन्तु जब यथार्थ के धरातल पर परीक्षण हो रहा है तो जो परिणाम आ रहे हैं वह चकित कर रहे हैं केवल उत्तर प्रदेश की बात न करके यदि हम सम्पूर्ण भारत पर एक दृष्टि डालें तो एक बात एकदम स्पष्ट रूप से नज़र आती है कि विकास का जो बहाव वास्तविक होना चाहिये वह नहीं हो रहा है लोग अपना हित साधने में लगे हैं, जो गुम हो गये थे वह भी मान्यता के नाम पर रोटियां सेंकने लगे हैं, यह हम सब के लिये सोचने का विषय है।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को यदि समाज में प्रभावी ढंग से स्थापित करना है तो यह आवश्यक है कि इस चिकित्सा पद्धति का लाभ कुछ व्यक्तियों तक न रहकर सर्वसमाज को मिले, कहने को तो कहा जाता है कि जितने भी रोग हैं उनपर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति का ज़बरदस्त प्रभाव है जैसा कि पढ़ा और पढ़ाया जाता है उसके अनुसार यह चिकित्सा पद्धति सामान्य से लेकर असाध्य एवं गम्भीर रोगों पर अधिक प्रभावी है परन्तु जिन लोगों द्वारा इस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाया जाता है उनकी संख्या बहुत सीमित है, किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के लिए यह अति आवश्यक होता है कि उस चिकित्सा पद्धति को व्यवहार में लाने वाले लोगों की संख्या अधिकाधिक हो, हमें स्मरण करना चाहिये कि आज से पहले जब होम्योपैथी का इतना प्रसार नहीं हुआ था तब जगह जगह पर इस चिकित्सा पद्धति के चिकित्सक रोगियों को स्वतः औषधियों को सेवन करने के लिए प्रेरित करते थे चूंकि मामला शरीर से जुड़ा है इसलिए कोई भी व्यक्ति आसानी से किसी भी औषधि को स्वीकार नहीं करता है, तब उसे यह बताया जाता था कि यह औषधियां यदि लाभ नहीं करेंगी तो हानि भी नहीं करेंगी, आज युग बदल चुका है हर क्षेत्र में ज़बरदस्त परिवर्तन हो चुका है।

चिकित्सा के क्षेत्र में बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं ऐसे में यदि इलेक्ट्रो होम्योपैथी को समान रूप से स्थापित करना है तो समाज में बहुत कार्य करना होगा, हमारे पास जो लाखों की संख्या है उन्हें अपने दायित्वों को समझना होगा और दायित्वों का पालन करते हुये एक नई कार्य पद्धति को जन्म देना होगा, यदि हम इलेक्ट्रो होम्योपैथी में विकास की बात करें तो इससे हम इन्कार नहीं कर सकते हैं कि चिकित्सा पद्धति का विकास नहीं हुआ है, लेकिन जो संतुलित और समन्वित वास्तविक विकास होना चाहिये वह नहीं हो पा रहा है, यदि हम इसके कारणों पर जायें तो अनेकों कारण दृष्टिगोचर होंगे परन्तु यदि हम पूर्ववर्ती कारणों को लेकर ही बातें करते रहे तो विकास दूर–दूर तक नहीं हो सकता है।

यह कटु सत्य है कि 2003 से 2012 तक का काल खण्ड इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिये बहुत कठिन रहा है लेकिन जिस सूझ–बूझ से इलेक्ट्रो होम्योपैथी के संचालकों ने इस चिकित्सा पद्धति को कार्य करने का एक अवसर दिलाया है तो हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम इस प्राप्त अवसर का भरपूर लाभ उठायें, जो बीत गया उस पर चर्चा करने से अच्छा है कि आगे की सोचें, वर्तमान युग प्रतिस्पर्धा का युग है, प्रतिस्पर्धा में वही टिकता है जिसके पास बौद्धिक सम्पदा का भण्डारण होता है, इलेक्ट्रो होम्योपैथी में बौद्धिक सम्पदा की कोई कमी नहीं है परन्तु इस सम्पदा का अभी भी पूर्ण रुप से प्रयोग नहीं हो पा रहा है हमारे चिकित्सकों के मन में पता नहीं कौन सी हीन भावना ने जन्म ले लिया है जिसके कारण वे अपनी पूरी क्षमता के साथ अपना कौशल प्रदर्शित नहीं कर पा रहे हैं, जो चिकित्सक अपने चिकित्सा व्यवसाय में केवल इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति की औषधियां व्यवहार में ला रहे हैं उन्हें सफ़लता प्राप्त हो रही है एवं परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं, इन प्राप्त परिणामों से चिकित्सकों में उत्साह का भाव जागृत हो रहा है।

पहले की तुलना में अब औषधियों की कमी नहीं है लगभग हर शहर में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक की औषधियां उपलब्ध हैं, हमारे कुछ औषधि निर्माताओं ने लूज़ टैब्लेट और स्ट्रिप्स के स्वरुप में अपने उत्पाद प्रस्तुत कर चिकित्सकों को और भी अधिक प्रतिस्पर्धी बना दिया है मूल औषधियों के साथ–साथ इस स्वरुप की औषधियों का प्रयोग चिकित्सक रोगी पर करता है और परिणाम भी अच्छे प्राप्त कर रहा है मगर इस प्रकार के कार्य करने वाले चिकित्सकों की संख्या का प्रतिशत हमें बढ़ाना है, जब चिकित्सा पद्धति का प्रभाव सामान्य जन स्वंय अनुभव करेगा तो इस चिकित्सा पद्धति को सरकारी मान्यता मिलने में समय नहीं लगेगा।

लोगों को चाहिये कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी में हो रही

नवीन जानकारियों से वे अपडेट रहें ताकि छात्रों को बिलकुल नवीन शोधों एवं जानकारियों से अवगत करा सकें जब–जब मान्यता की बात उठाकर आन्दोलन की बात चिकित्सकों से की जाती है तो हर चिकित्सक को यह समझाया जाये कि केन्द्र सरकार मान्यता निश्चित रुप से देगी लेकिन मान्यता के लिये सड़कों पर उतरकर आन्दोलन की अपेक्षा अपनी क्लीनिकों में बैठकर कार्य संस्कृति पनपाने का आन्दोलन किया जाये तो विकास की गति ज़्यादा तेज़ी से बढ़ेगी चिकित्सकों के मन में जो निराशा का भाव है वह कार्य से ही दूर होगा ऐसा नहीं है कि कार्य नहीं हो रहा है कार्य संस्कृति बड़ी तेज़ी के साथ बदल रही है गत वर्षों में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति से चिकित्सा व्यवसाय करने वाले चिकित्सकों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुयी है यह किसी भी चिकित्सा पद्धति के विकास के शुभ संकेत हैं।

जो चिकित्सक अभी भी अन्य विधा प्रयोग में लाते हैं उनके अन्दर भी एक नई ऊर्जा का संचार हो रहा है और यह चिकित्सक भी अब इलेक्ट्रो होम्योपैथी चिकित्सा विधा से चिकित्सा करने का मन बना रहे

शेष पेज 2 पर

हमें मार्ग से नहीं भटकना चाहिये

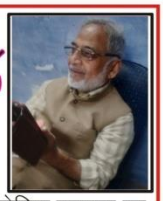

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता देने के लिए सरकार ने लगभग 68 वर्ष पूर्व ही आश्वासन दे दिया था जो सिलसिला लगातार आजतक जारी है, कई बार सकारात्मक परिवर्तन भी आये लेकिन सरकार का आश्वासन लगातार जारी रहा। सन् 1956 व 1975 में कुछ परिवर्तन की दिशा बनी, सन् 1981 एवं 1982 में इलेक्ट्रो होम्योपैथी का रास्ता अलग हो गया और यहीं से इलेक्ट्रो होम्योपैथी ने ज़ोर पकड़ा जिसके परिणाम में 1984 में भारत सरकार को अपने फैसले पर संतोष करना पड़ा।

इलेक्ट्रो होम्योपैथी की मान्यता देने के मामले में सरकार का आश्वासन उसे सही लगा और सरकार ने लगातार इसे आगे बढ़ाया सन् 1988, 1991 एवं 1993 में उसके द्वारा जो आदेश जारी किये गये वह इलेक्ट्रो होम्योपैथी में मील का पत्थर साबित हुए लेकिन हमारा दुर्भाग्य यह रहा कि हम सरकार की सकारात्मक पहल के मुकाबले बराबर नकारात्मक प्रयास करते रहे, सरकार का ही सहयोग नहीं अपितु माननीय न्यायालयों का भी भरपूर सहयोग समय–समय पर हमें मिलता रहा, सन 1998 एवं सन 2000 में भी माननीय न्यायालयों के निर्देशानुसार ही 2003 में इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए एक स्पष्ट दिशा निर्देश सरकार द्वारा जारी किया गया, हमने वहां भी नकारात्मक सोच उत्पन्न की और स्पष्ट आदेश को भी नहीं समझ सके, उसे भी नकारात्मक मानते हुए सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी को बन्द मान लिया, पूरे भारत की शीर्ष संस्थाओं तथा इलेक्ट्रो होम्योपैथी के बड़े–बड़े नेता एक ही लाइन में चल पड़े, पूरे भारत में केवल बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने सकारात्मक सोच के साथ कहा कि ***इस आदेश से इलेक्ट्रो होम्योपैथी बन्द नहीं हो रही है और न ही सरकार की बन्द करने की मंशा है,*** यह नकारात्मक सोच लोगों की तब समाप्त हुई जब सन 2010 में ***केन्द्र सरकार ने स्पष्ट किया कि इलेक्ट्रो होम्योपैथी पर रोक नहीं है,*** इस आदेश के आने के बाद भी लोग नहीं समझ सके तो इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया ने पहल करते हुए भारत सरकार को लिखा, भारत सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया को ***दिनांक 21 जून, 2011 को स्पष्ट करते हुये सभी राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को निर्देशित किया कि वह भारत सरकार के आदेश दिनांक 25–11–2003 व 5–5–2010 को केन्द्र सरकार का निर्देश माने,*** तमाम उतार चढ़ाव, शासकीय व वैधानिक अड़चनों से लड़ते हुये अन्ततः 4 जनवरी, 2012 को प्रदेश सरकार ने बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 द्वारा विधि सम्मत ढंग से संचालित किये जाने वाले कार्य पर सहमति की मुहर लगाते हुये बोर्ड के पक्ष में शासनादेश जारी किया,भारत सरकार ने भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता देने के लिए एक बार फिर एक नोटिस जारी करते हुए सभी सम्बद्ध पक्षों से प्रस्ताव मांगे जिसमें सरकार ने स्पष्ट किया कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी को मान्यता देना चाहती है उसी नोटिस में आभास कराया कि सरकार अपनी ओर से कोर्स का चयन करते हुए नियामक का भी चयन कर सकती है।

देश की अनेक संस्थाओं ने नोटिस के भाव को फिर से नकारात्मक सोचते हुए मनमाने ढंग से ''प्रपोज़ल'' सरकार को प्रेषित किये यहां तक कि एक–एक संस्था ने कई–कई नामों से प्रपोज़ल प्रेषित किये जो नकारात्मक सोच का प्रतीक है, ज्ञात सूत्रों के अनुसार प्रथम चरण में 21 तथा दूसरे चरण में 6 प्रपोज़ल कुल 27 प्रपोज़ल, अन्तिम चरण में 29 प्रपोज़ल कर्ताओं को वार्ता हेतु आमंत्रित किया गया, प्रारम्भिक चर्चा के उपरान्त उन्हें पुनः निर्देश दिये गये कि नोटिस में दिये गये बिन्दुओं के अनुसार ही एक संयुक्त प्रपोज़ल प्रस्तुत किया जाये, नकारात्मक सोच का ही परिणाम रहा कि प्रपोज़ल तो संयुक्त रूप से सरकार को प्रेषित किया गया परन्तु उनमें उन्हीं लोगों के नाम सम्मिलित किये गये जो उनके प्रिय थे या फिर उनके जैसे मत वाले थे या उनको अपने नाम से कुछ पाने के लिए बड़ी जल्दी थी या फिर वह यह दिखाना चाहते हैं कि वह ही सबसे बड़े एवं अगुवाकार हैं।

संयुक्त प्रपोज़ल में कुछ ऐसे लोगों का भी नाम सम्मिलित किया गया जिन्होनें पूर्व में प्रपोज़ल दिये ही नहीं थे उनके नामों पर सरकार द्वारा प्रश्नचिन्ह ? खड़ा किया गया नकारात्मक सोच के कारण ही कुछ संस्थाओं को छोड़ दिया गया किन्तु सरकार ने अपनी सकारात्मक सोच को दिखाते हुए जिन संस्थाओ को छोड़ा गया था उनके बारे में भी पुनः जानकारी चाही है, कुछ संस्थाओ ने इन प्रपोज़लों में अपना हित न देखते हुये माननीय मंत्री स्तर से नये प्रपोजल प्रेषित कराया।

संयुक्त प्रपोज़ल कर्ताओं एवं प्रपोज़लकर्ताओं के अन्य समूह को चाहिये कि वह अपनी नकारात्मक सोच को छोड़ कर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढें और अब कोई ऐसी गतिविधि सरकार के सामने न प्रकट करें जिससे इलेक्ट्रो होम्योपैथी को कोई नुकसान हो।

इलेट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों का पंजीयन अब मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में नहीं होगा – डा0 कुशवाहा

इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों का पंजीकरण अब मुख्य चिकित्साधिकारी कार्यालय में नहीं होंगे उक्त विचार आशीष इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल इन्सटीट्यूट रायबरेली के प्राचार्य डा0 पी0 एन0 कुशवाहा ने चिकित्सकों को सम्बोधित करते हुए व्यक्त किया, डा0 कुशवाहा ने कहा कि उ0प्र0 शासन चिकित्सा अनुभाग–6 के कार्यालय ज्ञाप संख्या 2914/पांच–6–10–23 रिट/11 दिनांक 04 जनवरी, 2012 एवं शासनादेश संख्या – 2241/पाँच–6–2015–103 जी/15 दिनांक 18 सितम्बर, 2015 तथा आयुष अनुभाग–1 के कार्यालय ज्ञाप संख्या 1297/71–आयु0–1–2016–डब्लू–283/2014 दिनांक 3 अगस्त, 2016 के अनुपालन में किया गया है उन्होंने यह भी कहा कि बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 के चेयरमैन डा0 एम0 एच0 इदरीसी ने रायबरेली में जनपद स्तरीय पंजीकरण हेतु डा0 रमेश कुमार द्विवेदी को प्रभारी अधिकारी नियुक्त किया है।

बैठक में डा0 रमेश कुमार द्विवेदी ने जनपद के समस्त इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों से अनुरोध किया है कि वे तत्काल अपना पंजीकरण करा लें जिससे बोर्ड को सूचना समय से दी जा सके ताकि माननीय उच्च न्यायालय इलाहाबाद के आदेश का पालन किया जा सके, बैठक में चिकित्सक त्रिलोक सिंह, सत्यपाल वर्मा, राम आसरे, राजेन्द्र सिंह, छोटे लाल, रिंकू ,दिनेश सिंह, सुनील कुमार, जितेन्द्र कुमार, विनोद कुमार, रावेन्द्र कुमार, मलखान, सौरभ वैश्य, दिनेश कुमार आदि उपस्थित थे बैठक की अध्यक्षता भाकपा के जिला सचिव श्री रामदीन विश्वकर्मा ने की।

ज़िले के इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सकों से वार्ता करते रायबरेली के डा0 पी0 एन0 कुशवाहा ठीक दायें डा0 रमेश द्विवेदी छाया गज़ट

इलेक्ट्रो होम्योपैथी के हितैषी .....

प्रथम पेज से आगे

हैं, हम आश्वस्त हैं कि धीरे–धीरे हमारी यह श्रंखला बहुत बड़ी और मज़बूत होगी तब इलेक्ट्रो होम्योपैथी किसी भी चुनौती को आसानी से स्वीकार कर लेगी।

हमारे पास किसी भी प्रकार का कोई सरकारी अनुदान नहीं आता है इसके उपरान्त भी हमारे इलेक्ट्रो होम्योपैथ निजी संसाधनों के बल पर शोध कार्य में लगे हुये हैं, शोधार्थियों को परिणाम भी अच्छे मिल रहे हैं यदि सरकार का थोड़ा सहयोग और समर्थन मिल जाये तो हमारे शोधार्थी किसी से कम उपयोगी नहीं रहेंगे, सरकार के सहयोग और समर्थन के लिये इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया निरन्तर प्रयासशील है, भारत सरकार एवं राज्य सरकारों से इस विषय पर पत्र व्यवहार हो रहा है जहाँ कहीं भी भौतिक सम्पर्क की आवश्यकता होती है वह भी किया जा रहा है, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति को जन–जन तक पहुँचाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिये क्योंकि यदि अधिकार पूवर्क कार्य करना है तो राज्य में प्रचलित कानूनों का पालन करते हुये जनपद स्तरीय पंजीकरण को अनिवार्य रुप कराना चाहिये ताकि शसन स्तर पर हमारी गणना हो सके, देश के कई प्रदेशों में अगले वर्ष विधानसभा चुनाव होने हैं, बी0एल0ओ0 से सम्पर्क कर यदि आवश्यक हो तो अपने व्यवसाय में इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक अंकित करायें, इससे राज्य सरकारों को भी जानकारी प्राप्त हो जायेगी कि उनके प्रदेश में कितने इलेक्ट्रो होम्यापैथिक चिकित्सक हैं।

हमें अपने कर्तव्य का बोध होना चाहिये,परन्तु कभी–कभी कष्ट होता है जब हमारे चिकित्सक अधिकारों के प्रति ज़्यादा जागरुकता दिखाते हैं लेकिन जब इन्हीं प्राप्त अधिकारों को उपभोग करने के लिये जिन कर्तव्यों की आवश्यकता होती है तब वह विमुख हो जाते हैं इस तरह के दोहरे व्यवहार से सफ़लता संदिग्ध रहती है।

प्रदेश में बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 और राष्ट्रीय स्तर पर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिकल एसोसिएशन ऑफ़ इण्डिया (इहमाई) इलेक्ट्रो होम्योपैथिक को तीव्रता से विकसित करने के लिये हर सम्भव प्रयत्न करने हेतु प्रतिबद्ध है।

प्रेरणा के नायक हैं

बाबा – ए – इलेक्ट्रो होम्योपथी

इलेक्ट्रो होम्योपैथी को वस्तुतः यदि हम स्थापित करना चाहते हैं तो हमें कार्य करना होगा क्योंकि सफ़लता का मूलमंत्र कार्य में छिपा होता है।

मनुष्य का जन्म लेना और कालकलवित होना सामान्य प्रक्रिया है जो आया है ! वह जायेगा ही !! उसके किये हुये कार्य सदैव याद किये जाते हैं और उनसे प्रेरित होकर भविष्य की नींव रखी जाती है, इतिहास बताता है कि कर्मों से ही व्यक्ति महान बनता है यह विचार इलेक्ट्रो होम्योपैथी के महान चिकित्सक डा0 नन्दलाल सिन्हा की जयन्ती पर आयोजित कार्यक्रम में डा0 एम0 एच0 इदरीसी चेयरमैन, बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने व्यक्त किये, डा0 इदरीसी ने कहा कि जो व्यक्ति महान होते हैं उनकी महानता के पीछे उनके किये गये कार्य ही होते हैं और यदि वह कार्य जनहित में किये गये होते हैं तो सदियों तक उन्हें याद किया जाता है, ऐसा नहीं है कि स्व0 नन्दलाल सिन्हा के पहले इलेक्ट्रो होम्योपैथी में कार्य नहीं हुआ था पहले भी इलेक्ट्रो होम्योपैथी के क्षेत्र में योग्य व महान चिकित्सकों ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के विकास के लिए कार्य किये जिनमें से डा0 एस0 पी0 श्रीवास्तव, डा0 बल्देव प्रसाद सक्सेना, डा0 वी0 एम0 कुलकर्णी (सभी यश शेष) के नाम प्रमुखतः से लिए जा सकते हैं।

डा0 नन्दलाल सिन्हा ने वह कार्य किये जिससे स्वतन्त्र भारत में इलेक्ट्रो होम्योपैथी को एक सम्मान जनक स्थान प्राप्त हुआ, आज उनके कार्यों की प्रासंगिकता फिर बढ़ गयी है क्योंकि अब वह समय आ गया है जब अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है तो कार्य के द्वारा समाज के बीच अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी होगी।

डा0 सिन्हा ने अपनी एक अलग पहचान बनाई उन्होंने कैंसर जैसे असाध्य रोग पर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की दावेदारी बतायी साथ–साथ रोगियों को लाभ भी दिया, कुष्ठ जैसे गम्भीर रोग पर भी डा0 सिन्हा ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता सिद्ध की, अब हम सब चिकित्सकों को मिलकर उस पुरानी दावेदारी को सही सिद्ध करके दिखाना है, डा0 इदरीसी ने अतीत को स्मरण करते हुए बताया कि स्व0 सिन्हा के काम करने का ढंग अलग ही था वह बहुत विश्वासपूर्वक अपनी पैथी पर भरोसा करते थे उन दिनों कैंसर के नाम से लोग काँपते थे, कैंसर जानलेवा बीमारी हुआ करती थी, आज की तरह उत्कृष्ट मशीनें नहीं थीं और न ही कीमोथेरेपी का जन्म हुआ था, कोबाल्ट और रेडियम की किरणों से रोगियों के रोगग्रस्त स्थान पर सिंकायी की जाती थी, बात सन 1973–74 की है जब कानपुर जैसे पूरे शहर में बड़ी–बड़ी होर्डिंगे लगा करती थीं जिनमें हाथ का पंजा बना होता था बांई तरफ़ और दांई तरफ़ लिखा होता था ठहरिए ! कोबाल्ट और रेडियम रेज़ लगवाने से पहले कैंसर रोगी मिलें !! यह यहाँ पर लिखने का मतलब यह है कि डा0 सिन्हा मान्यता से ज़्यादा काम करने पर ध्यान देते थे उनका मानना था कि काम बोलता है।

हम काम के दम पर मान्यता पायेंगे !
मान्यता मांग कर नहीं !!
कार्य के परिणामों से मिलती है !!!

इसका जीता जागता उदाहरण उन्होंने प्रस्तुत किया सरकार द्वारा इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता जाँच के लिए दिये गये कुष्ठ रोगियों के ऊपर इलेक्ट्रो होम्योपैथी की औषधियों का प्रयोग कर उन्हें आराम दिलाया और सरकार को विवश किया कि सरकार इलेक्ट्रो होम्योपैथी की उपयोगिता को स्वीकारे, इसी का परिणाम था कि 27 मार्च, 1953 का वह अर्धशासकीय पत्र जो प्रदेश सरकार ने इलेक्ट्रो होम्योपैथी के लिए जारी किया था, यह उदाहरण यह सिद्ध करता है कि कार्य की महत्ता श्रेष्ठ है, दुर्भाग्य से आज कार्य के स्थान पर माँगों पर ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है, मान्यता एक ऐसा मुद्दा बना दिया गया है और ऐसा वातावरण तैयार कर दिया गया है कि जैसे बिना मान्यता के कार्य की आवश्यकता ही नहीं है जबकि सत्य यह है कि पहले की तुलना में आज कार्य करने में ज़्यादा आसानी है औषधियों की उपलब्धता भी बढ़ी है माँग और पूर्ति का अनुपात लगभग बराबर है फिर भी कार्य के प्रति लोगों की रूचि नहीं है तो आइये आज 30 नवम्बर, 2021 के दिन हम सब चिकित्सक यह संकल्प लें कि इतना कार्य करें जिससे सरकार हमें मान्यता देने पर विवश हो जाये, आपको बता दें कि डा0 नन्दलाल सिन्हा का जन्म 30 नवम्बर, 1889 को हुआ था और पूरा देश 30 नवम्बर का दिन सिन्हा जयन्ती के रूप में मनाता है।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डा0 संजय द्विवेदी ने कहा कि डा0 इदरीसी ने जो वास्तविक दृश्य अपने वक्तव्य के माध्यम से प्रस्तुत किया हैं निसन्देह उसपर चलकर ही सफ़लता अर्जित की जा सकती है, भावनाओं के लिए स्थान तो है लेकिन कर्तव्यों पर भावनायें हावी नहीं होनी चाहिये, हर व्यक्ति को अपनी योग्यता का मान होता है, हर चिकित्सक को क्षमतानुसार चिकित्सा करनी होगी, जो कुछ यदि हमें नहीं आता है तो साथी चिकित्सक से पूछने में कोई परहेज़ नहीं करना चाहिये, एक दूसरे से पूछने में ज्ञानवृद्धि होती है, कोई छोटा बड़ा नहीं होता है, हमें किसी अन्य चिकित्सा पद्धति से स्वयं की तुलना नहीं करनी चाहिये, हम जिस पद्धति के हैं उसी पर गर्व करते हैं और गर्व से कार्य करना चाहिये, आज कार्य को प्रमुखतः दें कल अच्छे परिणाम आपकी प्रतीक्षा करेंगे, कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए डा0 मिथलेश कुमार मिश्रा ने कहा कि परिस्थितियां लाख बदल जायें परन्तु कार्य की गति नहीं बदलनी चाहिये क्योंकि परिस्थितियां समय के वशीभूत होती हैं लेकिन कार्य मनुष्य के अधीन होता है इलेक्ट्रो होम्योपैथी का यह एक दुःखद पहलू है कि यहां पर कामनायें तो हर एक व्यक्ति करता है लेकिन कामना की पूर्ति के लिए जो आवश्यक कार्य हैं उनसे विरत रहता है, हमें कार्य सस्कृति को पुनर्जीवित करना है, ऐसे सस्कारों को जन्म देना है जो कार्य को प्रमुखता दें, सिन्हा जयन्ती की सार्थकता मात्र फूल माला चढ़ाकर रस्म अदायेगी से नहीं होनी चाहिये अपितु कार्य करके होनी चाहिये, मान्यता के भूत से ऊपर उठकर कार्य करते हुए मान्यता लेने का प्रयास होना चाहिये जिन लोगों ने आज कार्य करने का संकल्प लिया है वह अपने संकल्प को पूरा करके दिखायेंगे, प्रायः यह देखा जाता है कि संकल्प तो लोग ले लेते हैं लेकिन उसपर अमल नहीं करते हैं, अन्त में कार्यक्रम के संयोजक डा0 अतीक अहमद रजिस्ट्रार बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 ने सम्बोधित करते हुए कहा कि हमारे सभी वक्ताओं ने कार्य की महत्ता पर विस्तार से चर्चा की परन्तु यह नहीं बताया कि कार्य कैसे किया जाये ? हमारे चिकित्सक बहुत सीधे हैं, उन्हें यह बताना होगा कि कार्य कैसे किया जाये ? मेरे हिसाब से हर चिकित्सक को चाहिये कि अपने पंजीकरण को ठीक करा ले और अपने क्लीनिक के बाहर इलेक्ट्रो होम्योपैथिक चिकित्सक का स्पष्ट बोर्ड लगाये, इलेक्ट्रो होम्योपैथिक औषधियों का ही प्रयोग करे और इन्हीं औषधियों से रोगी की चिकित्सा करे, हाँ! एक बात और है प्रदेश में वैधानिक रूप से चिकित्सा करने के लिए जनपदीय पंजीयन अवश्य करायें, जनपदीय पंजीयन *बोर्ड ऑफ़ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0* द्वारा नियुक्त प्रभारी एवं क्षेत्रीय अधिकारी द्वारा निःशुल्क जारी किये जाते हैं, अन्य व्यवस्थाओं के लिये बोर्ड ऑफ़ इलेट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0 निरन्तर प्रयासरत है, शीघ्र ही परिणाम आयेंगे, भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है, जो लोग आप से मान्यता की बात करें आप उनसे कहें कि आप भी काम करें और हमें भी करने दें फिर हम दोनों मिलकर मान्यता की लड़ाई लड़ेंगे, मान्यता तो मिलनी ही है आज नहीं तो कल लेकिन यदि आज काम नहीं किया तो कल का इंतजार व्यर्थ है।

आज के दिन की सार्थकता कार्य से है इसलिए प्राथमिकता के आधार कार्य को स्थान दें कार्यक्रम को डा0 वाई0 आई0 खान, डा0 राम औतार कुशवाहा, डा0 संजय द्विवेदी, डा0 प्रमोद सिंह, डा0मिथलेश कुमार मिश्रा, मो0 नसीम, मो0 वसीम आदि ने सम्बोधित किया कार्यक्रम का संचालन डा0 अतीक अहमद ने किया।

बोर्ड ऑफ इलेक्ट्रो होम्योपैथिक मेडिसिन, उ0प्र0

(स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा आदेष प्राप्त, इहमाई द्वारा अनुमोदित)

8— लालबाग, कमला षर्मा मार्ग, लखनऊ—226001
प्रषा0 कार्यालय : 127/204 ''एस'' जूही, कानपुर—208014
website- www.behm.org.in Email: registrarbehmup@gmail.com

प्रवेश सूचना

F.M.E.H. दो वर्ष (चार सेमेस्टर) – इण्टरमीडियेट अथवा समकक्ष

G.E.H.S. चार वर्ष+(1 वर्ष इन्टर्नशिप) – 10+2 जीव विज्ञान अथवा समकक्ष

P.G.E.H. दो वर्ष – G.E.H.S अथवा चिकित्सा स्नातक

C.E.H. एक वर्ष – हाई स्कूल अथवा समकक्ष

A.C.E.H. एक सेमेस्टर – किसी भी चिकित्सा पद्धति में न्यूनतम दो वर्ष का पाठ्क्रम उत्तीर्ण (इलेक्ट्रो होम्योपैथी 30 अप्रैल, 2004 से पूर्व/पैरा मेडिकल /किसी राजकीय चिकित्सा परिषद द्वारा पंजीकृत/ सूचीकृत चिकित्सक)

विस्तृत जानकारी हेतु बोर्ड की अधिकृत संस्थाओं से सम्पर्क करें अथवा **www.behm.org.in पर log in** करें।

LIST OF AUTHORISED INSTITUTIONS

Code	Name of InstituteAddress & District	Name of Principal	Name of Manager & Mobile No.
1	Ashish Electro Homoeopathic Medical Insitute, Chajlapur, Po: I.T.I.,Door Bhash Nagar, Raibareli	Dr. P. N. Kushwah	Dr. P.N. Kushwaha , 9415177119
3	Awadh Electro Homoeopathic Medical Insitute, Shri Om Sai Dham,Indrpuri Colony,Sitapur Road, Lucknow	Dr. R. K. Kapoor	Smt. Sunita Kapoor , 9335916076
4	Indira Gandhi Electro Homoeopathic Medical Insitute, Near Bhagva Chungi, Naya Mal Godam Road, Pratapgarh	VACANT	VACANT
5	Bhagwan MahaveerElectro Homoeopathic Insitute, Pan Dareeba, Jaunpur	Dr. Pramod Kumar Maurya	Smt. Sushila Maurya , 9451162709
6	Maa sarju Devi Electro Homoeopathic Medical Insitute, 2537 - Mishrana, Lakhimpur	Dr. R. K. Sharma	R.K. Sharma , 8115545675
7	Mahoba Electro Homoeopathic Institute, Behind Block Office Subhash Nagar, MAHOBA-210427	Dr. Ajai Barsaiya	Smt. Rajni Awasthi , 8423596191
11	Chandpar Electro Homoeopathic Medical Insitute, Anjan Shaheed, Azamgarh	Dr. Mushtaq Ahmad	Dr. Iftekhar Ahmad,9415358163
13	Azad Electro Homoeopathic Medical Insitute, Kintoor, Barabanki	Dr. Habib-ur- Rahman	Dr. Habib-ur-Rehman, 8052791197
14	Fatehpur Electro Homoeopathic Medical Insitute, Deviganj, Fatehpur	VACANT	Dr. Afzal Ahmad Kazmi, 9450332981
15	Electro Homoeopathic Medical Insitute , Mahmanshah, Near Charkhamba,Shahjahan pur	Dr. Ammar-Bin-Sabir	Dr.S.A. Siddique, 9336034277
16	Shahganj Electro Homoeopathic Medical Insitute , Behind Mahila Hospiital, Dihawa Bhadi,Shahganj, Jaunpur	Dr. S. N. Rai	Dr. Rajendra Prasad, 9450088327
17	Prema Devi Electro Homoeopathic Medical Institute, Siddhatth Children Campus, Arya Nagar, Siddharth Nagar	Dr. Ved Prakash Srivastav	Dr. V.P. Srivastav 9415669294

LIST OF AUTHORISED STUDY CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
51	Dr. Adil M. Khan	Parsauni Kala,Padrauna	KUSHI NAGAR	9836131988	WhatsApp No: 7985063850
52	Dr. Pradeep Kumar Srivastava	8/366 Tube Well Colony	DEORIA	9415826491	
53	Dr. Bhoop Raj Shrivastava	120-Basheerganj	BAHRAICH	9451786214	
55	Dr. Ayaz Ahmad	Beneath K.G.S. Gramir Bank, Walidpur	MAU	9305963908	
56	Dr. Gaya Prasad	Aarti Electro Homoeopathic Study Centre, Barkhera, Kalpi	JALAUN	8874429538	
57	Dr. N. Bhushan Nigam	B.K.E.H. Study Centre, Patkana	HAMIRPUR	9889426312	
59	Dr. Mohammad Israr Khan	Araw Road, Sirsaganj	FIROZABAD	9634503421	
60	Dr. Mohd. Akhlak Khan	128- Katra Purdal Khan	ETAWAH	6395361883	
61	Dr. Shiv Kumar Pal	Prem Nagar, Dak Banglow Bye Pass Road	FIROZABAD	9027342885	
62	Dr. Pundreek Tripathi	Hameed Nagar Ward No-3, Nautanwa	MAHARAJGANJ	7398941680	mpsr31@gmail.com
63	Dr. Ram Autar Kushwaha	Kushwaha Electro Homoeopathic Clinic & Study centre	KANPUR	9793261649	

LIST OF AUTHORISED STUDY/GUIDENCE CENTRES OTHER STATE

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
81	Dr. Devendra Singh	374/4 Shahid Bhagat Singh Colony, Karawal Nagar	DELHI-110090	9873609565	
82	Dr. Pankaj Kumar	Kaithi P.S. Chautham	KHAGARIA-851201	7549417934	

LIST OF AUTHORISED EXAMINATION CENTRES

Code	Head of Centre	Address	District	Mobile No	E-mail
91	Dr. P. K. Ragahav	Khurja	BULAND SHAHAR	9837897021	
92	Dr. S.K. Saxena	Parker College Road	MORADABAD	8171869605	
93	Electro Homoeopathic Exam	Registrar B.E.H.M. U.P. Kanpur Campus	KANPUR	0512-2970704	
95	Dr. Vikas	303/6 Gyan Nagar, Purkhas Road	SONIPAT-131001	9639300426	7302653934

Registrar

बी0ई0एच0एम0 के लिए डा0 अतीक अहमद द्वारा गजट प्रेस 126 टी/22 'ए' रामलाल का तालाब, जूही, कानपुर–208014 से मुद्रित एवं मिथलेश कुमार मिश्रा द्वारा कम्प्यूटराइज्ड करा कर 9/1 पीली कालोनी, जूही, कानपुर–208014 से प्रकाशित किया।